

राज्यपाल ने लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की पुण्यतिथि पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की

लखनऊ: 1 अगस्त 2018

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने आज लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की पुण्यतिथि के अवसर पर लालबाग स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा में लखनऊ की महापौर डॉ० संयुक्ता भाटिया, भातखण्डे संगीत संस्थान सम विश्वविद्यालय की कुलपति सुश्री श्रुति सडोलीकर, श्री उदय खत्री, श्री सुधीर हलवासिया सहित अन्य नागरिकजन उपस्थित थे।

राज्यपाल ने श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि लोकमान्य तिलक स्वाधीनता आन्दोलन के महानायक थे जिन्होंने देश की आजादी के लिए जन जागरण द्वारा चेतना का निर्माण किया। वे एक उच्चकोटि के चिन्तक, ओजस्वी वक्ता, दार्शनिक एवं समाज सुधारक थे, उन्होंने समाज में प्रचलित गलत धारणाओं का बौद्धिक प्रतिकार किया। लोकमान्य तिलक ने पुणे में डेक्कन एजुकेशन सोसायटी की स्थापना की थी। उच्च शिक्षा हेतु विदेश जाने वाले व्यक्तियों को वे देशभक्ति की शिक्षा देते थे। वीर सावरकर हो या सेनापति बापट, सभी स्वतंत्रता सेनानियों के लिये लोकमान्य तिलक का जीवन दीपस्तम्भ की तरह रहा जो सभी को प्रेरणा देता था।

श्री नाईक ने कहा कि बाल गंगाधर तिलक ने लखनऊ में 1916 में 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर रहूंगा' का नारा दिया था जिसने स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए लोगों को प्रेरणा एवं ताकत दी। बाल गंगाधर तिलक ने 'केसरी' और 'मराठा' जैसे समाचार पत्र का सम्पादन कर अंग्रेजों के विरुद्ध जनजागरण करते रहे जिसके लिए अंग्रेजी हुकूमत ने 'असंतोष का जनक' कहते हुये बर्मा की रंगून जेल में कैद किया। जेल में रहते हुए उन्होंने भगवद्गीता पर आधारित 'गीता रहस्य' ग्रंथ की रचना की जो कर्मयोगियों के लिये मार्गदर्शक की तरह है। लोकमान्य तिलक ने महाराष्ट्र में गणेश उत्सव और शिवाजी उत्सव जैसे आयोजनों को सामूहिक रूप से आयोजन करने को बढ़ावा देकर देशवासियों को सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से एक सूत्र में बांधने का सफल प्रयास किया।

राज्यपाल ने कहा कि पराधीनता के समय देश के लोगों को रोजगार देने तथा एकजुटता के लिये उन्होंने पुणे में नागरिकों से एक-एक पैसा एकत्र कर कांच उद्योग में फैक्ट्री 'पैसा-फण्ड' की स्थापना की जो आज भी चल रही है। राज्यपाल ने कहा कि लोकमान्य तिलक का निधन 1920 में हुआ था। दो वर्ष बाद अर्थात् 2020 में उनकी 100वीं पुण्यतिथि होगी। उनके द्वारा बताये गये मार्ग पर चलकर तथा देश को विकास के पथ पर अग्रसर करके हम सच्चे अर्थों में उनको श्रद्धांजलि अर्पित कर पायेंगे।

इस अवसर पर महापौर डॉ० संयुक्ता भाटिया सहित अन्य लोगों ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

